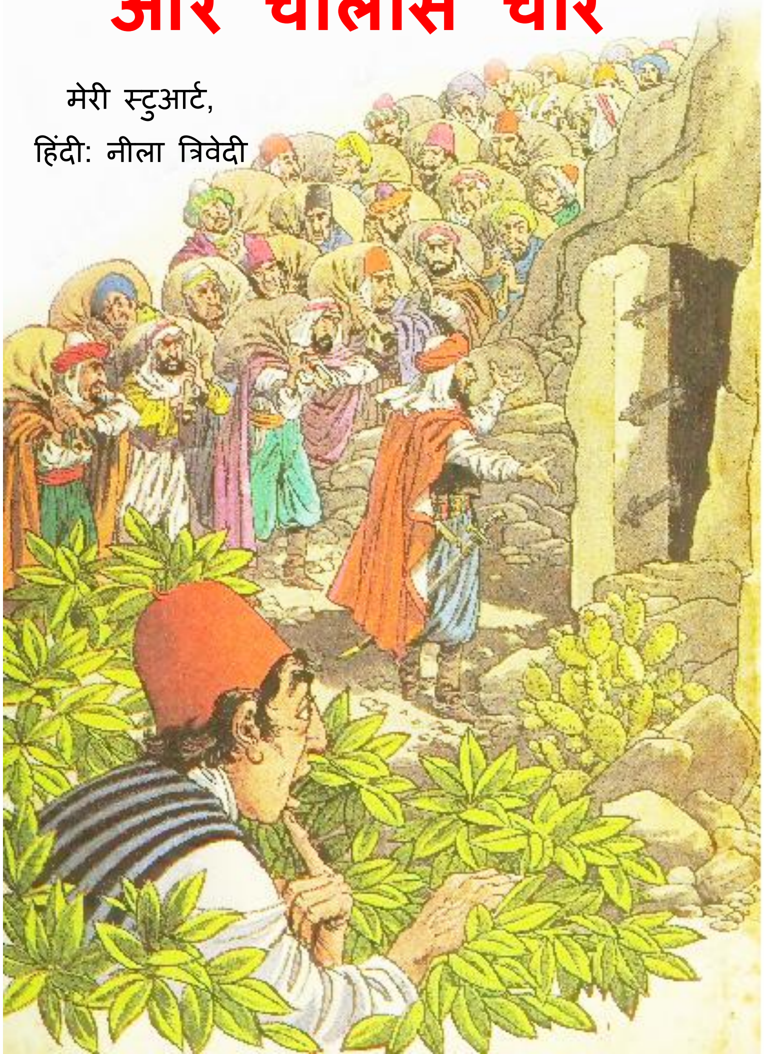
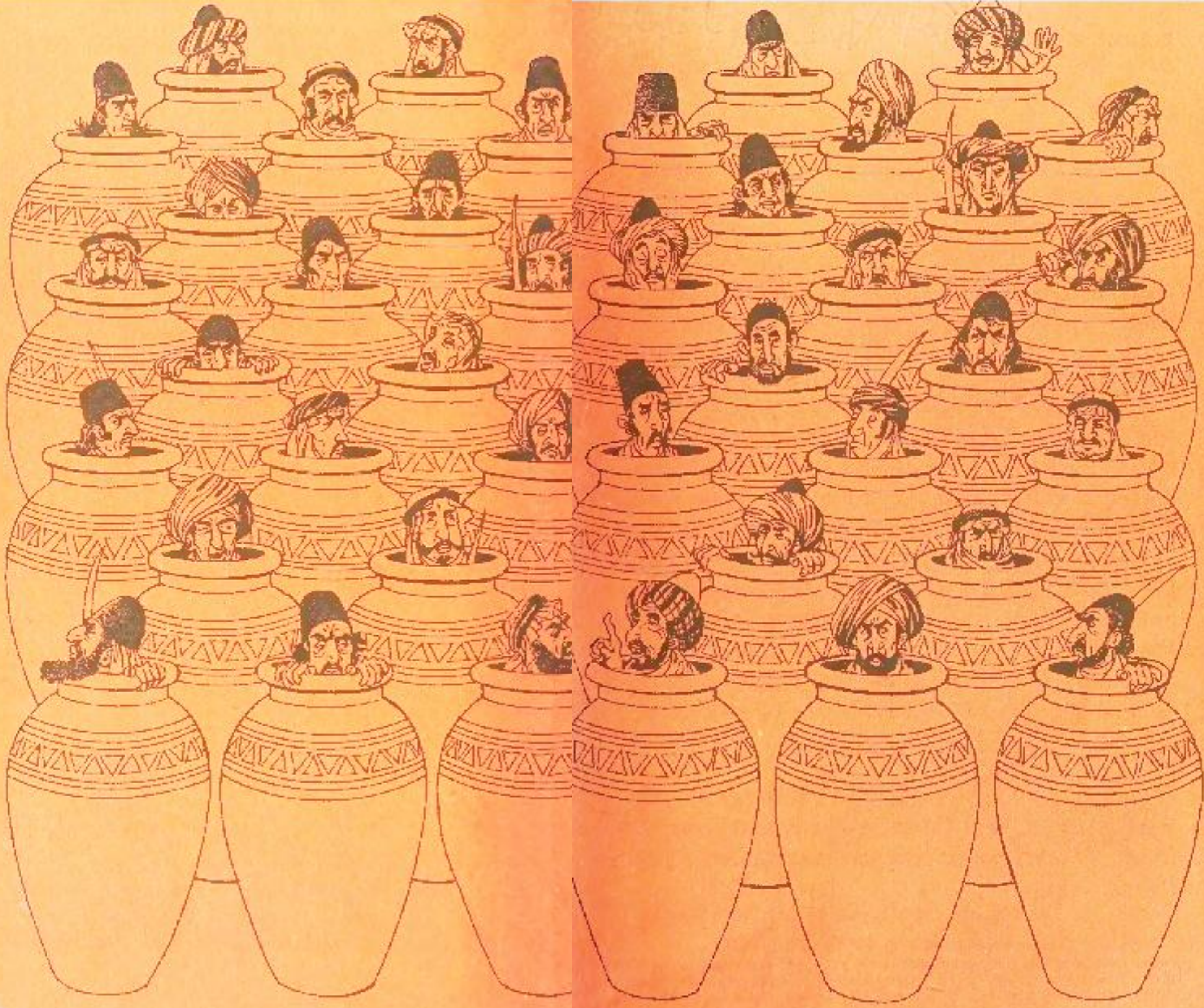
अली बाबा

और चालीस चोर

मेरी स्टुआर्ट,

हिंदी: नीला त्रिवेदी





अली बाबा की कहानी "द थाउज़ंड एंड वन नाइट्स" (हज़ार और एक रातें) नामक कहानियों के संग्रह से ली गई है। ये कहानियाँ प्राचीन फ़ारसी, अरबी और भारतीय लोककथाओं पर आधारित हैं, जो सैकड़ों वर्षों तक मौखिक रूप से एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुँचती रहीं। इनका वर्तमान रूप पहली बार सन् 1450 में अरबी भाषा में सामने आया। इन सभी कथाओं को शेहेरज़ादे की कहानी एक सूत्र में पिरोती है।

शेहेरज़ादे, सुल्तान की पत्नी थी और उसे उसके दुष्कर्मों के कारण मृत्यु-दंड दिया गया था। उसने अपनी फाँसी को टालने के लिए एक उपाय निकाला। वह हर रात सुल्तान की उपस्थिति में अपनी बहन को एक कहानी सुनाती थी। शेहेरज़ादे न केवल बहुत बुद्धिमान महिला थी, बल्कि एक प्रतिभाशाली कथावाचिका भी थी। वह हमेशा कहानी के सबसे रोमांचक हिस्से पर पहुँचकर उसे अगले दिन तक अधूरा छोड़ देती थी। सुल्तान किसी भी कहानी का अंत जाने बिना नहीं रह पाता था, इसलिए वह उसकी फाँसी को बार-बार टालता रहा। इस प्रकार, एक हज़ार एक रातों तक शेहेरज़ादे ने अपनी कहानियों के जादू से सुल्तान को मंत्रमुग्ध बनाए रखा। अंततः सुल्तान को एहसास हुआ कि वह गलत था और उसने शेहेरज़ादे को क्षमा कर दिया।

ये कहानियाँ आज भी उतनी ही रोचक और मनमोहक हैं जितनी वे उन पुराने दिनों में थीं। यहाँ इन्हें सरल भाषा में प्रस्तुत किया गया है ताकि छोटे पाठक भी इनका आनंद ले सकें।

अली बाबा और चालीस चोर

पुनर्कथन: मेरी स्टुआर्ट

हिंदी: नीला त्रिवेदी



अली बाबा और चालीस चोर

बहुत समय पहले दो भाई रहते थे। बड़े भाई का नाम कासिम था और छोटे भाई का नाम अली बाबा।

जब वे बड़े हुए, तो कासिम ने एक अमीर महिला से विवाह कर लिया। लेकिन अली बाबा ने एक गरीब महिला से शादी की, जिसके पास बिल्कुल भी धन नहीं था।

इस कारण अली बाबा और उसकी पत्नी को एक छोटे से घर में रहना पड़ता था। उनके पास खाने-पीने और आराम की अच्छी चीज़ें नहीं थीं।

अली बाबा अपनी रोज़ी-रोटी कमाने के लिए बहुत मेहनत करता था। वह हर दिन जंगल जाकर लकड़ियाँ काटता था। फिर उन लकड़ियों को अपने तीन छोटे गधों की पीठ पर लादकर घर लाता था।

इसके बाद वह शहर की गलियों में घूम-घूमकर लकड़ियाँ बेचता था। कई महिलाएँ अपने घरों से बाहर आकर उससे लकड़ियाँ खरीदती थीं।

इसी तरह अली बाबा अपने परिवार का पालन-पोषण करता था। लेकिन उसकी कमाई बहुत कम थी। वह अपनी पत्नी और बेटे के लिए मुश्किल से ही कुछ पैसे घर ला पाता था।







एक दिन अली बाबा जंगल में लकड़ियाँ काट रहा था। तभी उसने कुछ आदमियों को घोड़ों पर सवार होकर अपनी ओर आते देखा।

अली बाबा को कुछ शक हुआ। उनकी शक्ल-सूरत उसे अच्छी नहीं लगी। इसलिए उसने अपने गधों से कहा, "मैं नहीं चाहता कि ये लोग मुझे देख लें। हो सकता है कि ये मेरी लकड़ियाँ छीन लें। तुम लोग यहाँ से दूर चले जाओ ताकि ये तुम्हें न देख सकें। मैं इस पेड़ पर चढ़ जाता हूँ। जब ये लोग चले जाएँगे, तब मैं तुम्हें बुला लूँगा।"

जैसे ही अली बाबा पेड़ पर चढ़ गया और पत्तों के बीच छिपकर बैठ गया, वे आदमी वहाँ आ पहुँचे। वे सभी घोड़ों पर सवार थे और किसी खास जगह की ओर जा रहे थे। तभी उनमें से सबसे आगे वाले आदमी ने ऊँची आवाज़ में कहा, "रुको! वह जगह उधर है!"

सभी आदमी अपने-अपने घोड़ों से उतर पड़े। अली बाबा ने देखा कि हर घोड़े की पीठ पर एक बड़ा थैला लदा हुआ था। उन आदमियों ने थैलों को घोड़ों की पीठ से उतारा और उन्हें अपनी पीठ पर उठा लिया।

फिर घोड़ों को वहाँ से दूर ले जाया गया। उसके बाद वे आदमी उस बड़ी चट्टान की ओर बढ़े, जो अली बाबा के पेड़ के पास थी।

अली बाबा पेड़ पर छिपा हुआ उन्हें ध्यान से देख रहा था। उसने उन आदमियों को गिनना शुरू किया।

उन्हें गिनकर वह चौंक गया। वे कुल चालीस आदमी थे।

बड़ी चट्टान के सामने खड़े होकर उन आदमियों में से एक ने पुकारा, "खुल जा सिमसिम!"

अली बाबा ने देखा कि चट्टान में एक दरवाज़ा खुल गया!

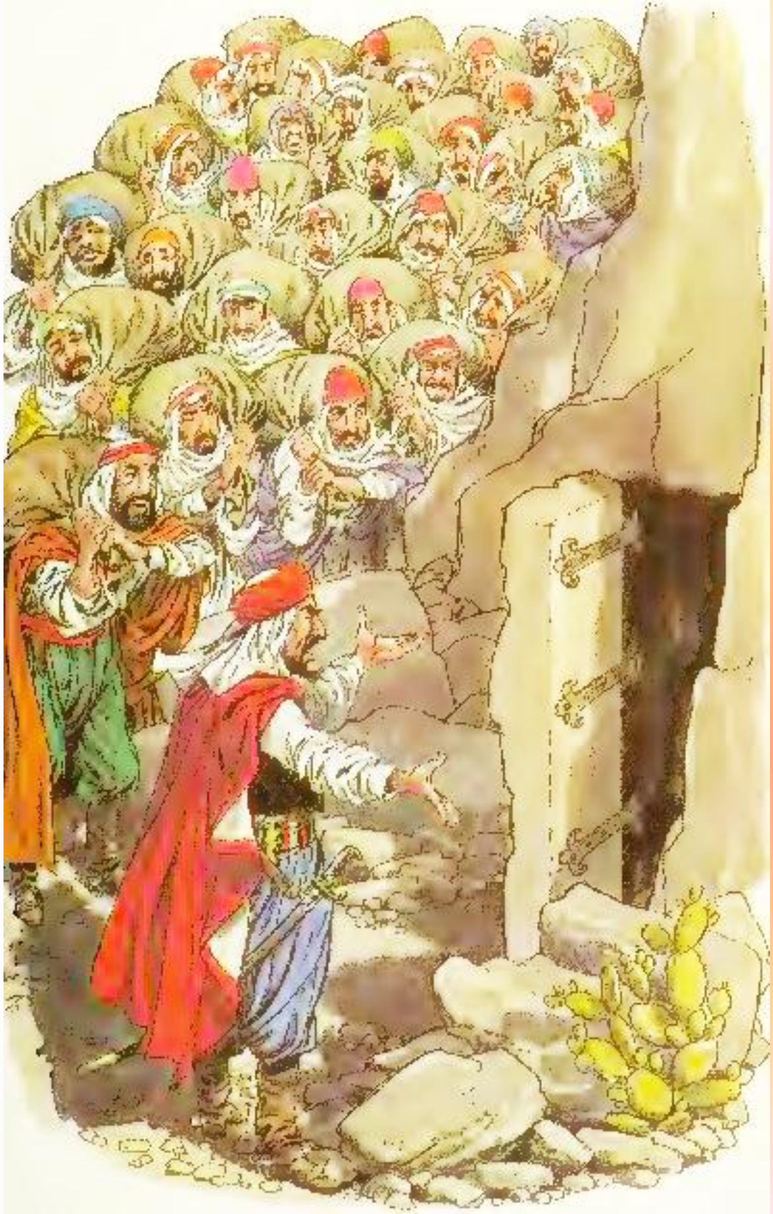
वह आदमी अंदर चला गया और उसके पीछे-पीछे बाकी सभी आदमी भी अंदर चले गए। जैसे ही आख़िरी आदमी अंदर पहुँचा, दरवाज़ा फिर से बंद हो गया।

अली बाबा ने मन ही मन कहा, "काश, मैं अभी पेड़ से उतरकर घर भाग सकता। लेकिन हो सकता है कि वे लोग जल्द ही बाहर आ जाएँ और मुझे देख लें।"

इसलिए वह पेड़ पर ही बैठा रहा। वह सोचने लगा कि उसने पहले कभी इस चट्टान में दरवाज़ा क्यों नहीं देखा था। इसे किसने खोला था? क्या यह किसी गुफा का प्रवेश-द्वार था?

फिर उसके मन में एक और सवाल आया। वे आदमी उन बड़े-बड़े थैलों को गुफा के अंदर क्यों ले गए थे? उन थैलों में क्या था? क्या उनमें धन-दौलत भरी हुई थी? अली बाबा सोचने लगा,"क्या ये लोग डाकू हैं?"

यदि ऐसा था, तो पेड़ से नीचे उतरना बहुत ख़तरनाक हो सकता था। लेकिन वे लोग अंदर गए हुए काफ़ी समय हो चुका था, और अली बाबा अब भी इंतज़ार कर रहा था।



आख़िरकार वे आदमी गुफा से बाहर निकल आए। अब उनके साथ कोई थैला नहीं था। जब सभी बाहर आ गए, तो उनके सरदार ने पुकारा,

"बंद हो जा सिमसिम!"

तुरंत चट्टान का दरवाज़ा बंद हो गया। इसके बाद वे अपने घोड़ों के पास गए, उन पर सवार हुए और वहाँ से चले गए।

जैसे ही वे नज़र से ओझल हुए, अली बाबा जल्दी से पेड़ से नीचे उतर आया। वह चट्टान के पास गया और उसी तरह पुकारा, जैसे उस आदमी ने पुकारा था,

"खुल जा सिमसिम!"

तुरंत चट्टान का दरवाज़ा खुल गया।

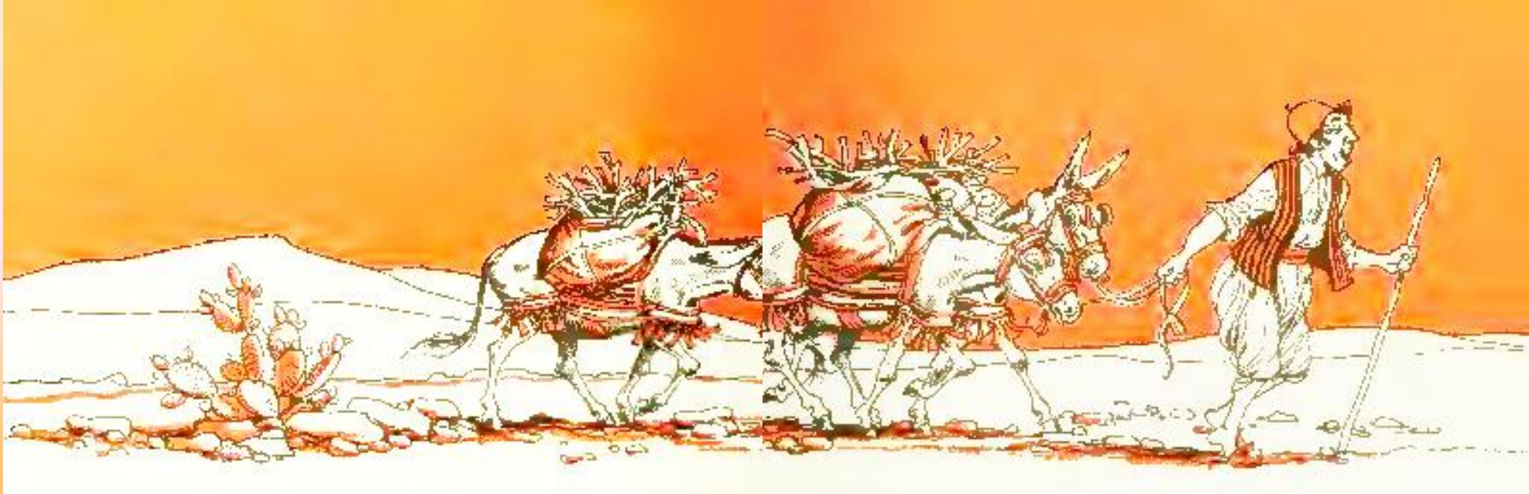
अली बाबा ने अंदर झाँककर देखा। वह एक बड़ी गुफा थी। उसमें केवल वे थैले ही नहीं थे जिन्हें वे डाकू छोड़ गए थे, बल्कि वहाँ सोना, चाँदी, जवाहरात और रेशमी कपड़ों का भी बड़ा ख़ज़ाना रखा हुआ था।

अली बाबा समझ गया कि उसके पास समय बहुत कम है। अगर वे आदमी वापस आ गए और उसे वहाँ देख लिया, तो वे उसे मार डालेंगे।

इसलिए वह जल्दी से गुफा के अंदर गया और चारों ओर ध्यान से देखने लगा।

तभी उसने देखा कि डाकुओं द्वारा छोड़े गए सभी थैले धन से भरे हुए थे!





अली बाबा ने जल्दी-जल्दी सबसे बड़े धन से भरे थैलों को गुफा के दरवाज़े के पास खींचकर रख दिया। जब वह गुफा के अंदर आया था, तब उसके पीछे दरवाज़ा अपने-आप बंद हो गया था। लेकिन जैसे ही उसने पुकारा,

"खुल जा सिमसिम!" दरवाज़ा तुरंत खुल गया और वह बाहर निकल आया।

बाहर आकर उसने कहा, "बंद हो जा सिमसिम!" और दरवाज़ा फिर से बंद हो गया।

इसके बाद अली बाबा अपने तीनों गधों को ढूँढ़ने निकल पड़ा। उन्हें ढूँढ़ने में उसे ज़्यादा समय नहीं लगा।

उसने धन से भरे थैलों को गधों की पीठ पर लाद दिया। फिर उन थैलों के ऊपर लकड़ियाँ रख दीं, ताकि किसी को यह पता न चल सके कि उनके नीचे धन छिपा हुआ है। सब कुछ तैयार हो जाने के बाद अली बाबा अपने गधों के साथ घर की ओर चल पड़ा।

जब अली बाबा की पत्नी ने उन थैलों में भरा हुआ सारा धन देखा, तो वह समझ ही नहीं पाई कि क्या कहे।

अली बाबा ने उसे बताया कि उसे यह धन कहाँ मिला था, लेकिन साथ ही चेतावनी भी दी कि वह इस बात का ज़िक्र किसी से न करे।

पत्नी ने पूछा, "तुम यह सब धन कहाँ रखोगे?"

अली बाबा ने उत्तर दिया, "मैं ज़मीन में एक गड्ढा खोदूँगा और इसे उसमें छिपा दूँगा।"

पत्नी ने कहा, "पहले मुझे तो देखने दो कि इसमें कितना धन है।"

यह कहते हुए उसने एक थैले में हाथ डाला। उसने मुट्ठी भर सिक्के निकाले और उन्हें अपनी उँगलियों के बीच से धीरे-धीरे फिसलने दिया।



अली बाबा की पत्नी सोने के सिक्कों को गिनने लगी।

"एक, दो, तीन, चार, पाँच, छह..."

अभी वह गिन ही रही थी कि अली बाबा ने कहा, "बस करो! इसमें बहुत समय लग जाएगा। तुम इन्हें कभी पूरा नहीं गिन पाओगी। यहाँ इतने सारे सिक्के हैं।"

पत्नी ने कहा, "तुम गड्ढा खोदो। मैं कासिम के घर जाकर उससे एक बर्तन माँग लाती हूँ, जिसमें हम इन्हें रख सकें। मैं जानना चाहती हूँ कि हमारे पास कितना धन है।"

अली बाबा ने उसे सावधान करते हुए कहा, "लेकिन यह मत बताना कि तुम्हें वह बर्तन किसलिए चाहिए।"

यह कहकर उसकी पत्नी कासिम के घर की ओर चल पड़ी।

कासिम उस समय घर पर नहीं था। वह अपनी दुकान पर गया हुआ था, लेकिन उसकी पत्नी घर में मौजूद थी।

कासिम की पत्नी ने पूछा, "तुम्हें यह बक्सा किसलिए चाहिए?"

अली बाबा की पत्नी ने उत्तर दिया, "इसमें थोड़ा आटा रखने के लिए। और क्या तुम मुझे एक मापने वाला प्याला भी दे सकती हो? मैं देखना चाहती हूँ कि हमारे पास कितना आटा है।"

कासिम की पत्नी ने कहा, "हाँ, मैं अभी तुम्हारे लिए एक ले आती हूँ। लेकिन काम हो जाने के बाद तुम्हें इसे वापस लौटा देना होगा।" यह कहकर वह प्याला लेने चली गई।



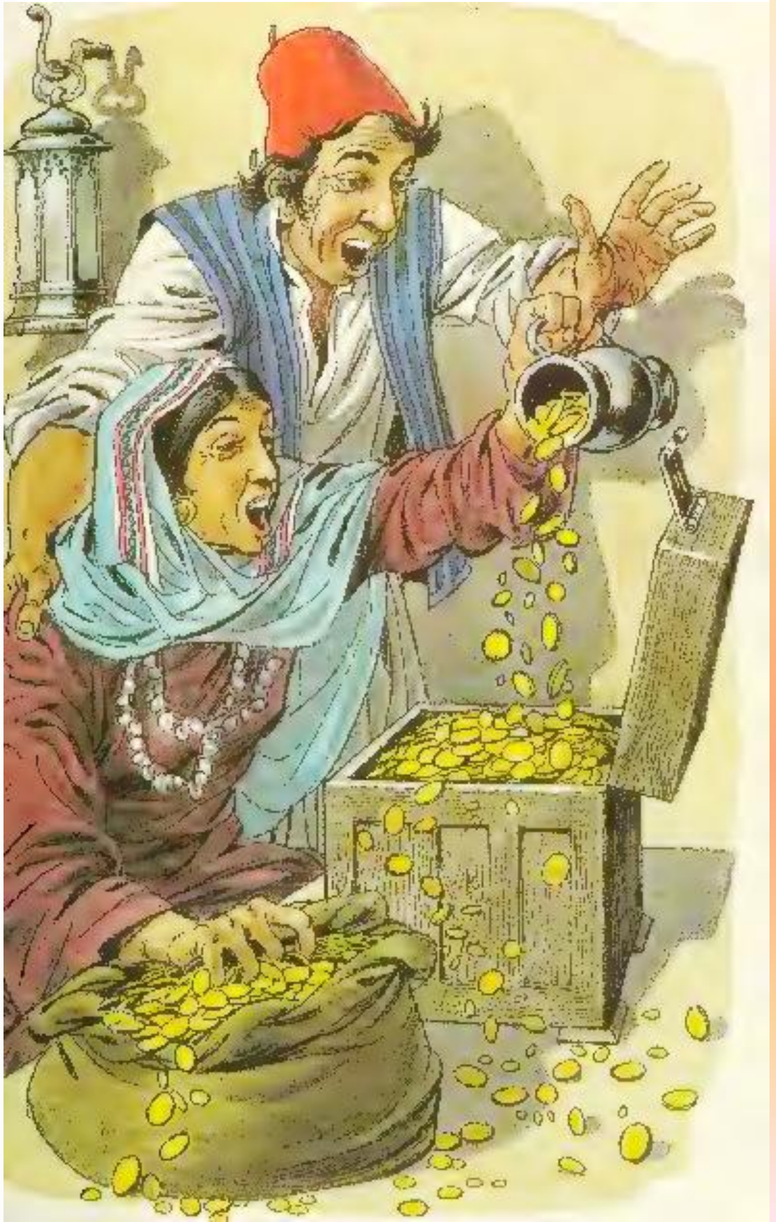
कासिम की पत्नी जब प्याला लेने गई, तो वह मन ही मन सोचने लगी, "अली बाबा की पत्नी के पास इतना आटा कैसे हो सकता है? उनके पास तो आटा खरीदने के लिए भी बहुत कम पैसे होते हैं। मुझे पता लगाना होगा कि वह क्या करने वाली है। मुझे एक तरकीब सूझ गई है!"

उसने चुपके से प्याले के नीचे थोड़ा-सा मोम लगा दिया, जहाँ वह आसानी से दिखाई न दे। उधर अली बाबा की पत्नी बक्सा और प्याला लेकर जितनी जल्दी हो सकती थी, घर लौट आई।

उसने कहा, "मैं देखूँगी कि इस प्याले को भरने में कितना धन लगता है। फिर हम यह पता लगा सकते हैं कि बक्से को भरने के लिए कितने प्याले धन की ज़रूरत होगी। इस तरह हमें मालूम हो जाएगा कि हमारे पास कुल कितना धन है।"

उन्होंने गिनती करके देखा कि बक्से को भरने के लिए धन से भरे चालीस प्याले चाहिए थे। फिर उन्होंने पाया कि केवल एक थैले का धन ही बक्से को तीन बार भर सकता था। लेकिन उनके पास तो ऐसे तीन पूरे थैले थे! यह सोचकर वे दोनों बहुत खुश हुए। कितना सारा धन था! और वह सब सोने का धन था!

अंत में अली बाबा की पत्नी ने कहा, "अब मुझे यह प्याला वापस करना चाहिए।"







अली बाबा की पत्नी को यह पता नहीं था कि प्याले के नीचे लगे मोम से एक सोने का सिक्का चिपक गया था।

जब उसने प्याला वापस कर दिया, तो कासिम की पत्नी ने जल्द ही उस सिक्के को देख लिया।

उसने सिक्का उठाया और मन ही मन समझ गई कि अली बाबा के घर में आटा नहीं, बल्कि सोना भरा हुआ है।

उस शाम जब कासिम अपनी दुकान से घर लौटा, तो उसकी पत्नी ने उससे पूछा, "क्या तुम्हारे पास कोई पैसा है?"

कासिम ने उत्तर दिया, "नहीं। आज मेरी ज़्यादा बिक्री नहीं हुई।"

तब उसकी पत्नी बोली, "लेकिन अली बाबा के पास तो है।"

यह सुनकर कासिम हैरान रह गया। उसे समझ नहीं आया कि उसका गरीब भाई अचानक धनवान कैसे बन गया।

कासिम ने हैरानी से कहा,

"तुम क्या कह रही हो? तुम तो जानती हो कि अली बाबा के पास कोई पैसा नहीं है।"

उसकी पत्नी बोली, "अरे! उसके पास तुमसे भी ज़्यादा धन है। उसके पास इतना सारा सोना है कि वह उसे एक बड़े बक्से में रखता है।"

फिर उसने कासिम को पूरी बात बता दी कि उसे यह रहस्य कैसे पता चला।

यह सुनकर कासिम बिल्कुल भी खुश नहीं हुआ। बल्कि उसे अपने भाई से ईर्ष्या होने लगी।

वह तुरंत अली बाबा के घर गया और उससे पूछने लगा कि उसे इतना सारा सोना कहाँ से मिला।

कासिम के मन में अब केवल एक ही बात थी—उसे उस ख़ज़ाने का पता जानना था।

अली बाबा ने आश्चर्य से पूछा, "तुम्हें कैसे पता चला कि मेरे पास धन है?"

जब कासिम ने उसे बताया कि उसकी पत्नी को यह बात कैसे मालूम हुई, तो अली बाबा ने कहा,

"ठीक है, मैं तुम्हें सब बता देता हूँ।"

लेकिन कासिम बहुत लालची था। वह यह नहीं चाहता था कि अली बाबा उससे ज़्यादा धनवान हो।

इसलिए उसने कहा,

"तुम मुझे उस जगह का पता बताओ जहाँ सोना रखा है। अगर तुमने नहीं बताया, तो मैं पुलिस के पास जाकर कह दूँगा कि तुम एक डाकू हो।"

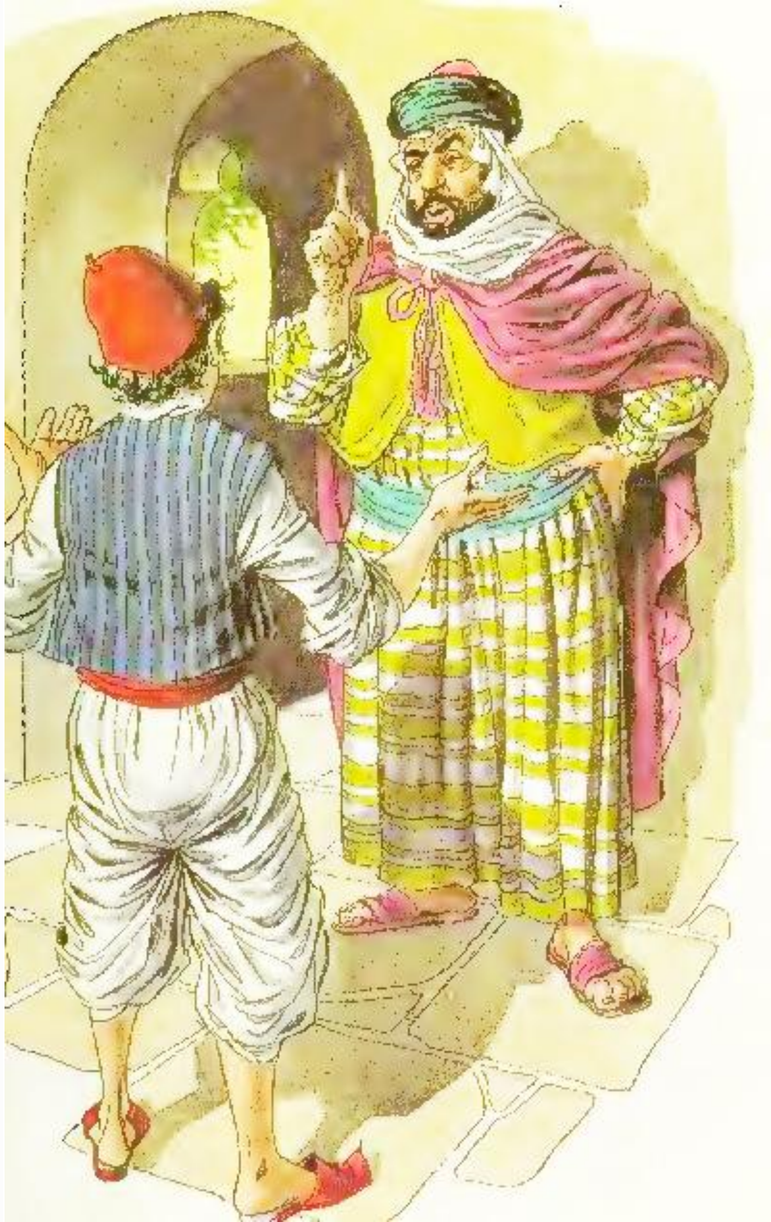
यह सुनकर अली बाबा ने कहा,

"ठीक है, मैं तुम्हें गुफा तक पहुँचने का रास्ता बता देता हूँ। जब तुम वहाँ पहुँचोगे, तो तुम्हें एक बड़ा पेड़ दिखाई देगा और उसके पास एक विशाल चट्टान होगी।"

"फिर तुम्हें बस इतना कहना है— 'खुल जा सिमसिम!' और चट्टान का दरवाज़ा खुल जाएगा।"

"जब तुम बाहर निकलो, तो कहना— 'बंद हो जा सिमसिम!' बस तुम्हें इतना ही करना है।"

कासिम ने ध्यान से सारी बातें सुन लीं।



अगले दिन सूरज निकलते ही कासिम अपने घोड़े पर सवार होकर निकल पड़ा। वह अपने साथ आठ और घोड़े भी ले गया था, ताकि गुफा से जितना अधिक धन हो सके, ले जा सके।

जल्द ही वह उस जगह पहुँच गया और चट्टान में बने दरवाज़े को ढूँढ़ लिया।

उसने पुकारा, "खुल जा सिमसिम!" तुरंत दरवाज़ा खुल गया।

कासिम गुफा के अंदर चला गया और उसके पीछे दरवाज़ा बंद हो गया।

गुफा के अंदर चारों ओर सोने, जवाहरात और ख़ज़ाने से भरे थैले पड़े थे। कासिम उन्हें देखकर दंग रह गया।

वह सोचने लगा कि कौन-से थैले ले जाए। आखिर उसने सबसे बड़े थैलों को खींचकर दरवाज़े के पास इकट्ठा करना शुरू कर दिया।

जब उसने ऐसे आठ बड़े थैले जमा कर लिए, तो उसने कहा, "मुझे नहीं लगता कि इस बार मैं इससे ज़्यादा ले जा सकता हूँ। अब मुझे जितनी जल्दी हो सके यहाँ से निकल जाना चाहिए। मैं नहीं चाहता कि वे डाकू मुझे यहाँ पकड़ लें।"

लेकिन वह थैलों में भरे ख़ज़ाने के बारे में इतना सोच रहा था कि दरवाज़ा खोलने का जादुई शब्द ही भूल गया।

उसने पुकारा, "खुल जा गेहूँ!"

लेकिन यह सही शब्द नहीं था।





कासिम ने फिर कोशिश की।

"खुल जा मक्का!" उसने पुकारा।

लेकिन यह भी सही शब्द नहीं था।

फिर उसने कहा, "खुल जा जई!" फिर भी कुछ नहीं हुआ।

घबराकर उसने दरवाज़े को धक्का दिया। फिर उसे खींचकर खोलने की कोशिश की, लेकिन दरवाज़ा नहीं खुला। वह बार-बार कोशिश करता रहा, पर उसे वह सही जादुई शब्द याद ही नहीं आ रहा था जिससे दरवाज़ा खुल सकता था।



कासिम अब भी गुफा के अंदर फँसा हुआ था, तभी डाकू वहाँ और थैले रखने के लिए वापस आए।

जैसे ही वे गुफा के पास पहुँचे, उन्होंने कासिम के घोड़ों को देखा।

एक डाकू ने दूसरे से कहा, "ज़रूर किसी को गुफा के अंदर जाने का रहस्य पता चल गया है। उसे भागने मत देना!"

फिर डाकुओं के सरदार ने पुकारा, "खुल जा सिमसिम!"

जैसे ही दरवाज़ा खुला, कासिम जान बचाने के लिए दौड़कर बाहर निकलने की कोशिश करने लगा। लेकिन डाकुओं ने उसे पकड़ लिया और उस पर हमला कर दिया। उन्हें लगा कि कासिम मर चुका है, इसलिए वे उसे गुफा के अंदर ही छोड़ गए।

इस तरह कासिम का लालच उसके लिए भारी पड़ गया। जिस ख़ज़ाने को पाने की चाह में वह गुफा तक पहुँचा था, उसी ने उसे भयंकर मुसीबत में डाल दिया।



उस रात कासिम की पत्नी घबराई हुई अली बाबा के पास आई और बोली,

"कासिम अभी तक घर वापस नहीं आया है। कृपया उसे ढूँढ़ने की कोशिश करो।"

यह सुनकर अली बाबा तुरंत गुफा की ओर चल पड़ा। जब वह वहाँ पहुँचा, तो उसने अपने भाई कासिम को देखा। वह बुरी तरह घायल था और लगभग मृत अवस्था में पड़ा हुआ था। अली बाबा ने उसे सावधानी से अपने गधे की पीठ पर लाद लिया और घर ले आया।

रास्ते भर वह सोचता रहा कि इस घटना के बारे में किसी को पता नहीं चलना चाहिए।

घर पहुँचकर उसने कहा, "हमें इस बात की भनक किसी को भी नहीं लगने देनी चाहिए।"



अली बाबा ने कहा, "हमें लोगों से कहना होगा कि कासिम बीमार है। मेरी पत्नी और मैं तुम्हारे घर आकर उसकी देखभाल में मदद करेंगे। लेकिन वह इतनी बुरी तरह घायल है कि हमें किसी की सहायता लेनी पड़ेगी।"

तभी मोरजियाना, जो कासिम की पत्नी के यहाँ काम करती थी, बोली,

"मैं ऐसे व्यक्ति को जानती हूँ जो हमारी मदद कर सकता है। वह एक बुद्धिमान बूढ़ा मोची है। उसने बहुत से बीमार लोगों को ठीक किया है। लेकिन उसे बुलाने के लिए मुझे कुछ पैसे चाहिए होंगे।"

अली बाबा और कासिम की पत्नी ने उसकी बात ध्यान से सुनी। उन्हें उम्मीद थी कि शायद वह बूढ़ा मोची कासिम की जान बचा सके।

अगली सुबह सूरज निकलने से पहले, जब गलियों में कोई दिखाई नहीं दे रहा था, मोरजियाना उस बूढ़े आदमी की दुकान पर पहुँची। वह बूढ़ा हमेशा बहुत सुबह अपना काम शुरू कर देता था।

मोरजियाना ने उससे कहा, "क्या आप हमारे घर चलेंगे? हमारे यहाँ एक व्यक्ति बहुत बीमार है। यदि आप हमारी मदद करेंगे, तो मैं आपको यह पैसे दूँगी।"

बूढ़े आदमी ने पूछा, "तुम्हारा घर कहाँ है?"

मोरजियाना ने उत्तर दिया, "मैं आपको यह नहीं बता सकती। आपको यह नहीं देखना चाहिए कि हमारा घर कहाँ है। इसलिए अपनी आँखें बंद कर लीजिए और जब तक मैं आपको वहाँ ले जाऊँ, तब तक उन्हें बंद ही रखिए।"

मोरजियाना उसे कासिम के घर ले गई और सीधे उसके शयनकक्ष में पहुँची।

फिर उसने कहा, "अब आप अपनी आँखें खोल सकते हैं। क्या आप इस आदमी की जान बचाने के लिए कुछ कर सकते हैं?"

बूढ़े और बुद्धिमान आदमी ने कासिम को ध्यान से देखा।

उसने सिर हिलाया और कहा, "यह आदमी बहुत गंभीर रूप से बीमार है, लेकिन मैं अपनी पूरी कोशिश करूँगा।" मोरजियाना और कासिम की पत्नी आशा भरी नज़रों से उसकी ओर देखने लगीं।



बूढ़े आदमी ने कासिम के घावों पर पट्टियाँ बाँधीं। उसने उसके लिए एक विशेष औषधीय पेय भी तैयार किया और कई घंटों तक उसकी देखभाल करता रहा। आखिर में उसने कहा, "मैं इस आदमी की मदद के लिए अब और कुछ नहीं कर सकता।"

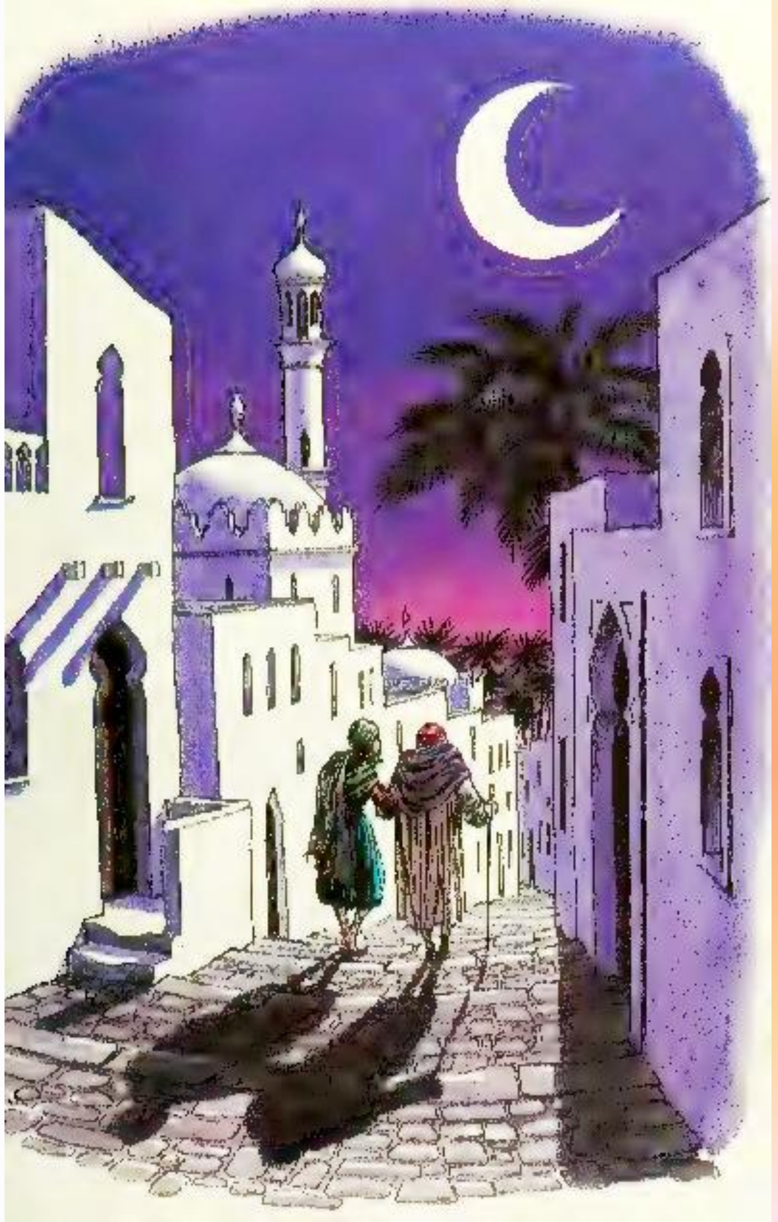
तब मोरजियाना ने उससे कहा, "आपने जो कुछ भी किया, उसके लिए आपका बहुत-बहुत धन्यवाद। अब मैं आपको आपकी दुकान तक वापस पहुँचा दूँगी। लेकिन कृपया किसी को मत बताइए कि आप यहाँ आए थे।"

बूढ़े आदमी ने अपनी आँखें बंद कर लीं और मोरजियाना उसे वापस उसकी दुकान तक ले गई।

दो दिन बाद कासिम की मृत्यु हो गई। तुरंत मोरजियाना सड़क पर दौड़ती हुई निकली और पुकारने लगी, "मेरे मालिक की मृत्यु हो गई! मेरे मालिक की मृत्यु हो गई!"

उसकी आवाज़ सुनकर आसपास की महिलाएँ अपने घरों से बाहर निकल आईं। उन्होंने कासिम की पत्नी को भी खिड़की पर खड़े रोते हुए देखा। अगले दिन कासिम के शव को शहर के बाहर ले जाकर दफना दिया गया।

इसके बाद अली बाबा और उसकी पत्नी, कासिम की पत्नी के साथ उसी के घर में रहने लगे। अली बाबा का बेटा भी कासिम की दुकान पर काम करने लगा। इस तरह कासिम की मृत्यु के बाद उसका परिवार अकेला नहीं रहा, और अली बाबा ने उनकी देखभाल की ज़िम्मेदारी अपने ऊपर ले ली।



तीन या चार दिन बाद डाकू फिर से गुफा में लौटे। जब उन्होंने चट्टान का दरवाज़ा खोला, तो देखा कि कासिम वहाँ नहीं था। वे हैरान रह गए।

एक डाकू ने कहा, "ज़रूर कोई उसे यहाँ से ले गया है।"

दूसरे ने कहा, "हममें से किसी एक को जाकर यह पता लगाना होगा कि वह कौन है। जिसने भी उसे यहाँ से हटाया है, उसे हमारी गुफा के बारे में ज़रूर पता होगा।"

डाकू समझ गए कि उनका रहस्य अब सुरक्षित नहीं रहा। यदि किसी को गुफा का पता चल गया था, तो वह उनके लिए ख़तरा बन सकता था।

तभी उनमें से एक आदमी आगे बढ़ा और बोला, "मैं जाऊँगा।"

बाकी डाकुओं ने उसकी ओर देखा। अब उस आदमी का काम था उस व्यक्ति को ढूँढ़ना, जो उनकी गुफा का रहस्य जानता था।

डाकू वहाँ से चल पड़ा। अगली सुबह वह उस गली में पहुँचा जहाँ बूढ़े मोची की दुकान थी। बूढ़ा अपनी दुकान के दरवाज़े पर बैठा था और उसके हाथ में एक जूता था।





डाकू ने उससे पूछा, "बाबा, क्या बहुत से लोग तुम्हारे पास जूते बनवाने या खरीदने आते हैं?"

बूढ़े आदमी ने उत्तर दिया, "हाँ, आते हैं। और लोग मेरे पास दूसरे कामों के लिए भी आते हैं।"

फिर उसने आगे कहा, "अभी कुछ दिन पहले ही मुझे एक ऐसे आदमी की जान बचाने के लिए बुलाया गया था, जिसे छुरा मारा गया था और जो लगभग मर चुका था।"

"लेकिन तब तक बहुत देर हो चुकी थी। मैं उसकी मदद के लिए ज़्यादा कुछ नहीं कर सका।"

यह सुनते ही डाकू चौकन्ना हो गया।उसे लगा कि शायद यही वह आदमी है जो उसे उस व्यक्ति तक पहुँचा सकता है, जो उनकी गुफा का रहस्य जानता था।अब उसने बूढ़े मोची से और जानकारी निकालने की ठान ली।

डाकू ने उत्सुकता से कहा, "क्या कहा! तुम मुझे उस घर तक ले चलो जहाँ तुम गए थे। बदले में मैं तुम्हें सोने की यह थैली दूँगा।"

बूढ़े आदमी ने उत्तर दिया, "मुझे नहीं पता कि वह घर कहाँ है, क्योंकि पूरे रास्ते मेरी आँखें बंद थीं। एक लड़की मुझे वहाँ ले गई थी।"

डाकू ने कहा, "तो अपनी आँखें बंद करके याद करने की कोशिश करो। तुम्हें यह तो याद होगा कि कहाँ दाएँ मुड़े थे, कहाँ बाएँ, और रास्ता लंबा था या छोटा। आओ, मेरा हाथ पकड़ो और अपनी आँखें बंद कर लो।"

फिर वे दोनों उसी तरह चल पड़े। आखिरकार वे कासिम के घर के सामने पहुँचकर रुक गए।

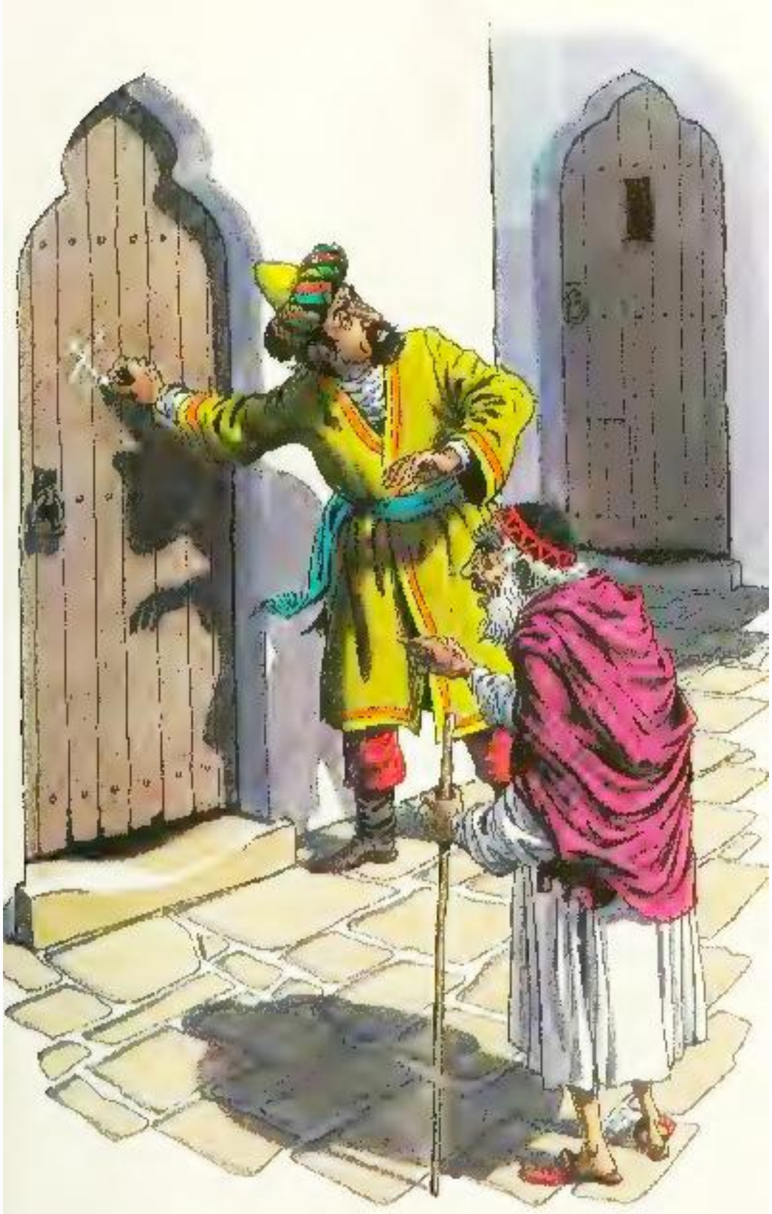
बूढ़े आदमी ने चारों ओर महसूस करते हुए कहा, "मुझे लगता है कि यही वह घर है।"

डाकू ने चुपके से घर के दरवाज़े पर सफेद रंग का एक क्रॉस (निशान) बना दिया।

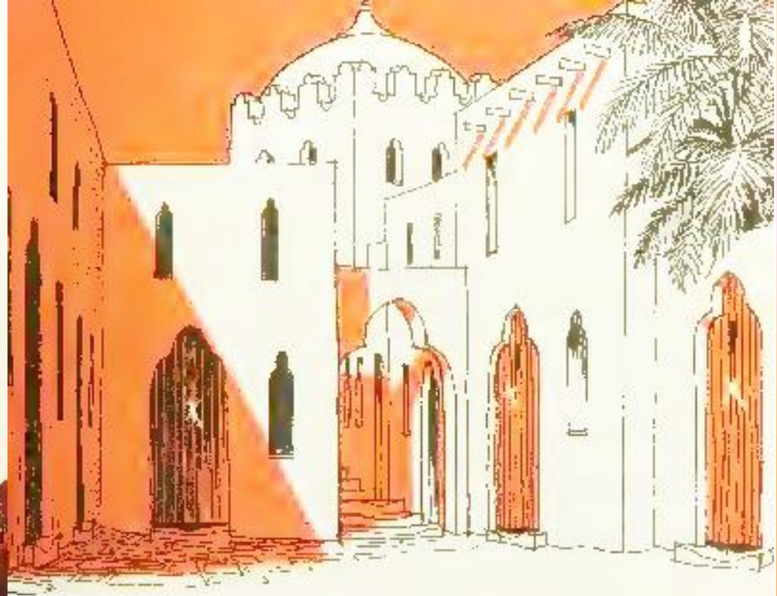
इसके बाद वह बूढ़े आदमी को वापस उसकी दुकान पर ले गया, उसे सोने की थैली दी और वहाँ से चला गया।

अब डाकू को विश्वास हो गया था कि उसने सही घर ढूँढ़ लिया है।

लेकिन उसे यह नहीं पता था कि उसकी योजना जल्द ही एक बहुत चतुर लड़की की वजह से विफल होने वाली है।







जब मोरजियाना बाज़ार जाने के लिए घर से बाहर निकली, तो उसने अपने दरवाज़े पर बना सफेद क्रॉस का निशान देखा।

वह हैरानी से सोचने लगी, "यह निशान यहाँ किसने बनाया होगा?" फिर उसने मन ही मन कहा, "हो सकता है यह बच्चों की शरारत हो, लेकिन मुझे ऐसा नहीं लगता। मुझे यह बात अच्छी नहीं लग रही। हमारे ही घर पर यह निशान क्यों है? दूसरे घरों पर क्यों नहीं?"

उसने जाकर आस-पास के सभी घरों के दरवाज़ों पर भी वैसा ही सफेद क्रॉस का निशान बना दिया। अब गली के हर घर का दरवाज़ा एक जैसा दिखाई देने लगा। यह काम पूरा करने के बाद वह आराम से अपनी खरीदारी करने चली गई। उसे यकीन था कि जिसने भी यह निशान बनाया है, उसकी योजना अब सफल नहीं होगी।

इस बीच वह डाकू वापस गुफा में पहुँच चुका था।

उसने दूसरे डाकुओं से कहा, "मैं उस आदमी का घर ढूँढ़ चुका हूँ। मेरे साथ चलो, मैं तुम्हें वहाँ ले चलता हूँ।"

यह सुनकर सभी डाकू उसके साथ चल पड़े। लेकिन जब वे उस गली में पहुँचे, तो डाकू हैरान रह गया। वहाँ बहुत-से घरों के दरवाज़ों पर सफेद क्रॉस का निशान बना हुआ था। अब वह पहचान ही नहीं पा रहा था कि उनमें से सही घर कौन-सा है। आखिरकार डाकुओं के पास कोई और उपाय नहीं बचा। उन्हें खाली हाथ वापस गुफा लौटना पड़ा।

उसने सोचा, "बाकी सभी घरों पर सफेद निशान हैं। इस घर पर केवल लाल निशान होगा, इसलिए मैं इसे आसानी से पहचान लूँगा।"

लेकिन जब मोरजियाना बाज़ार से वापस लौटी, तो उसने दरवाज़े पर बना लाल निशान देख लिया। उसे तुरंत समझ आ गया कि कोई फिर से उनके घर को पहचानने की कोशिश कर रहा है। इसलिए उसने वैसा ही लाल निशान आसपास के दूसरे घरों के दरवाज़ों पर भी बना दिया, ठीक वैसे ही जैसे उसने पहले सफेद निशानों के साथ किया था।

जब डाकू फिर से वहाँ आए, तो वे एक बार फिर सही घर नहीं पहचान सके।

यह देखकर डाकुओं का सरदार गुस्से में बोला, "इस तरह काम नहीं चलेगा! अब मुझे खुद जाकर उस घर का पता लगाना होगा।"

फिर वह स्वयं बूढ़े आदमी के पास गया। बूढ़े ने उसे भी उसी तरह उस घर तक पहुँचा दिया, जैसे पहले दोनों डाकुओं को पहुँचाया था। लेकिन इस बार सरदार ने कोई निशान नहीं बनाया। उसने घर को बहुत ध्यान से देखा, उसके आस-पास की हर चीज़ को याद कर लिया और फिर वहाँ से चला गया। अब वह पूरी तरह निश्चित था कि अगली बार वह उस घर को पहचान लेगा।

तब एक दूसरे डाकू ने कहा, "मुझे कोशिश करने दो।"

अगले दिन वह डाकू भी उसी बूढ़े आदमी को अपने साथ ले गया, जैसे पहले वाला डाकू ले गया था। जब वे उस घर तक पहुँचे, तो उस डाकू ने दरवाज़े पर लाल रंग का एक क्रॉस का निशान बना दिया।



डाकुओं का सरदार जब वापस लौटा, तो उसने अपने साथियों से कहा, "मुझे सोचने दो कि अब आगे क्या करना चाहिए।" अगले दिन उसने कहा, "मुझे एक योजना सूझ गई है!" फिर उसने आदेश दिया,

"तुम लोग कुछ बड़े-बड़े मटके खरीदकर लाओ, जैसे तेल रखने के लिए इस्तेमाल किए जाते हैं। लेकिन उनमें से केवल एक मटके में तेल होगा। बाकी सभी मटके खाली रहने चाहिए।"

एक डाकू ने हैरानी से पूछा, "लेकिन ऐसा क्यों?"

सरदार ने उत्तर दिया, "क्योंकि तुम सब उन मटकों के अंदर छिपोगे। जब मटकों को घोड़ों पर लाद दिया जाएगा, तब मैं उन्हें लेकर अली बाबा के घर जाऊँगा।"

वह आगे बोला, "मैं अली बाबा से कहूँगा कि मैं बहुत दूर से आया हुआ एक व्यापारी हूँ और रात भर ठहरने के लिए उसके घर में जगह चाहता हूँ।"

डाकुओं ने पूछा, "और हमारा क्या होगा?"

सरदार ने कहा, "तुम सब मटकों के अंदर छिपे रहोगे। वे इतने बड़े हैं कि उनमें तुम्हारे लिए पर्याप्त जगह होगी। जब सही समय आएगा, तब मैं तुम्हें बता दूँगा कि क्या करना है।"

डाकुओं ने अपने सरदार की योजना सुन ली। अब वे अली बाबा के घर पहुँचने और अपने बदले की योजना को पूरा करने की तैयारी करने लगे।



सब कुछ ठीक वैसा ही हुआ जैसा डाकुओं के सरदार ने योजना बनाई थी।

अली बाबा ने उस अजनबी व्यापारी को रात भर अपने घर में ठहरने की अनुमति दे दी।

अली बाबा ने उसकी मदद की और घोड़ों की पीठ से बड़े-बड़े मटकों को उतारकर रख दिया।

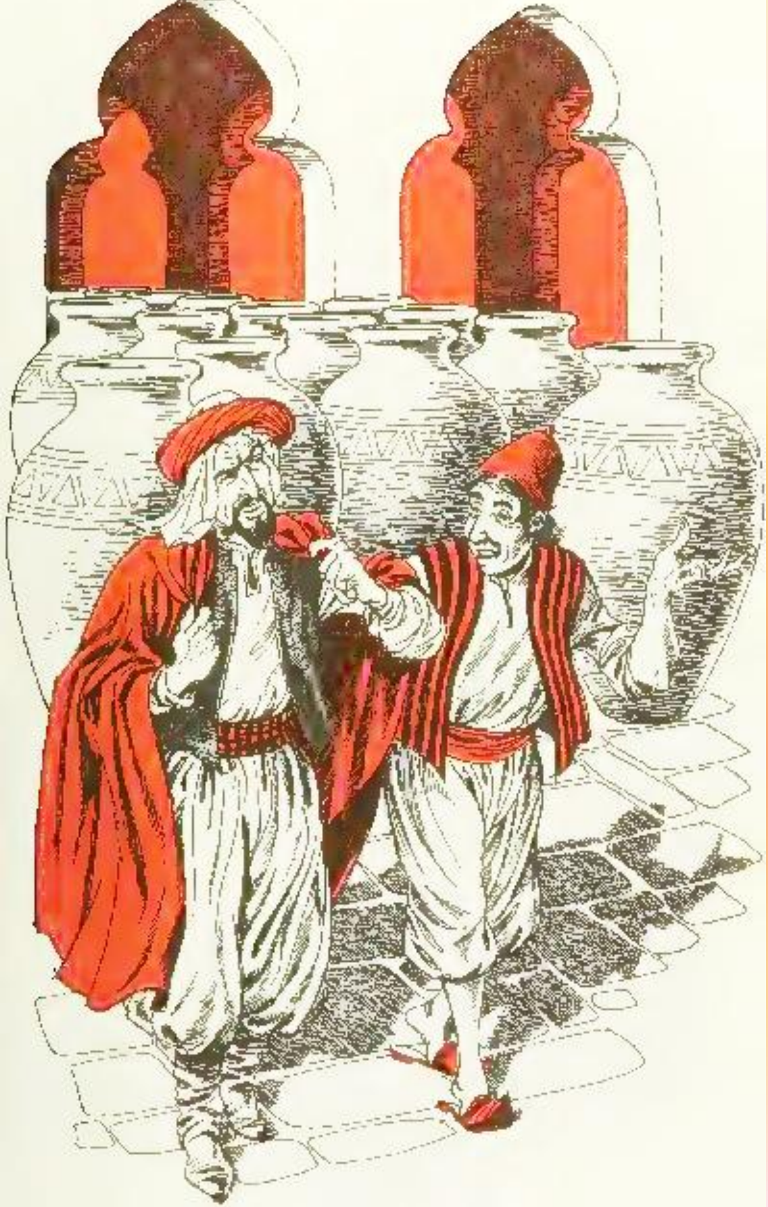
फिर उसने मुस्कुराकर कहा,"अब अंदर आइए और हमारे साथ अच्छा भोजन कीजिए।"

डाकुओं का सरदार घर के अंदर गया। उसने भरपेट खाना खाया और खूब पानी पिया।

भोजन के बाद उसने कहा, "अब मुझे घोड़ों को पानी पिलाने जाना चाहिए।"

यह कहकर वह अस्तबल में गया।वहाँ उसने एक-एक मटके के पास जाकर उसमें छिपे डाकू से धीरे-धीरे बात की। उसने कहा, "जब मैं अपनी खिड़की से पक्षी जैसी आवाज़ निकालूँ, तो तुम सब अपने-अपने मटकों से बाहर निकल आना। फिर मैं नीचे आकर तुम्हें बताऊँगा कि क्या करना है।"

सभी डाकुओं ने उसकी बात ध्यान से सुन ली और चुपचाप इंतज़ार करने लगे। इसके बाद डाकुओं का सरदार वापस घर के अंदर चला गया।



रात के लिए चूल्हा तैयार करने जब मोरजियाना गई, तो उसका दीपक बुझ गया। अँधेरे में उसे कुछ दिखाई नहीं दे रहा था। उसने सोचा, "मुझे सुबह और तेल खरीदना पड़ेगा। लेकिन आज रात मैं उन मटकों में से किसी एक से थोड़ा तेल ले लेती हूँ।"

वह पहले मटके के पास गई। जैसे ही वह उसके पास पहुँची, मटके में छिपे आदमी ने, यह समझकर कि वह उनका सरदार है, धीरे से पूछा, "क्या समय आ गया है?"

यह सुनकर मोरजियाना चौंक पड़ी। लेकिन उसने तुरंत अपनी सूझ-बूझ से गहरी आवाज़ में उत्तर दिया,

"अभी नहीं... जल्द ही।"

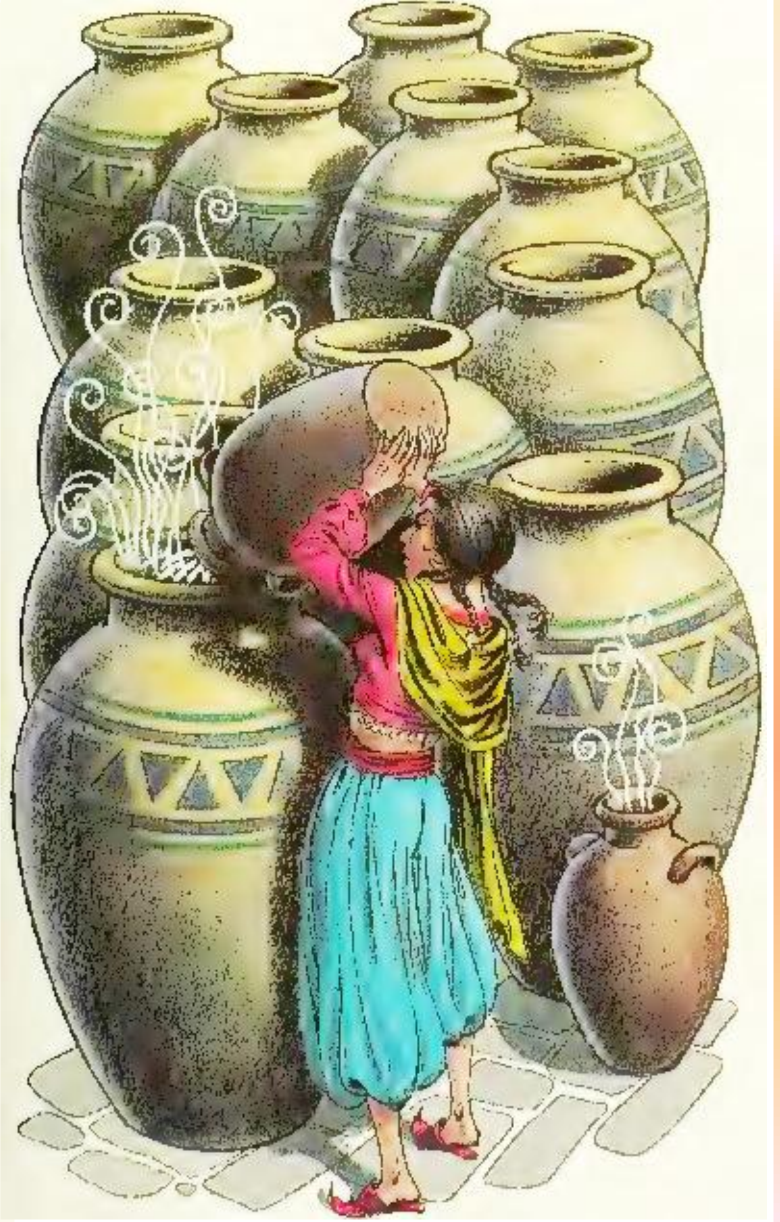
फिर वह दूसरे मटके के पास गई। वहाँ भी वही हुआ। अंदर छिपे आदमी ने पूछा, "क्या समय आ गया है?"

मोरजियाना ने फिर जवाब दिया, "अभी नहीं। जल्द ही।"

वह एक-एक करके सभी मटकों के पास गई और हर बार उसे वही प्रश्न सुनने को मिला।

अब मोरजियाना सब समझ चुकी थी। उसे पता चल गया कि मटकों में तेल नहीं, बल्कि डाकू छिपे हुए हैं।

आख़िर में वह उस आख़िरी मटके के पास पहुँची जिसमें सचमुच तेल भरा हुआ था। उसने उसमें से थोड़ा तेल अपने दीपक में डाला। फिर उसने और तेल निकाला, उसे खूब गर्म किया और उबलता हुआ तेल एक-एक करके उन सभी मटकों में डाल दिया जिनमें डाकू छिपे बैठे थे। और इसी के साथ उन डाकुओं का अंत हो गया।





उस रात जब डाकुओं का सरदार नीचे आया, तो उसने देखा कि उसके सभी साथी मर चुके हैं।

यह देखकर वह घबरा गया। बिना एक पल गँवाए वह अपने घोड़े पर सवार हुआ और तेज़ी से वहाँ से भाग निकला।

अगली सुबह मोरजियाना ने अली बाबा को पूरी घटना बताई। उसने उसे दरवाज़ों पर बने सफेद और लाल निशानों के बारे में भी बताया और यह भी बताया कि कैसे उसने डाकुओं की योजना को विफल कर दिया था।

अली बाबा ने उसकी बात सुनी और उसका दिल से धन्यवाद किया। उसने कहा, "मैं तुम्हारे इस उपकार को कभी नहीं भूलूँगा।"

फिर अली बाबा ने अपने कुछ आदमियों को जंगल में एक बड़ा गड्ढा खोदने का आदेश दिया। उस रात वे सभी मृत डाकुओं को वहाँ ले गए और उन्हें उस गड्ढे में दफना दिया।

अब केवल डाकुओं का सरदार ही जीवित बचा था और बदला लेने का मौका तलाश रहा है।

अब डाकुओं का सरदार बिल्कुल अकेला रह गया था। उसने सोचा, "मैं एक दुकान खरीद लेता हूँ। गुफा में जो रेशमी कपड़े और जवाहरात हैं, उन्हें वहाँ रखूँगा। यदि मैं उन्हें बेचूँ, तो अच्छी कमाई कर सकता हूँ।"

फिर उसने वैसा ही किया।

उसने एक दुकान खरीद ली और गुफा से लाए गए रेशमी कपड़े तथा कीमती जवाहरात उसमें सजाकर रख दिए। जल्द ही उसकी दुकान की चर्चा पूरे शहर में होने लगी। लोग वहाँ खरीदारी करने आने लगे और सब कहते, "क्या शानदार दुकान है!"

एक दिन अली बाबा के बेटे की मुलाकात डाकुओं के सरदार से हुई।

उन दोनों की दुकानें एक-दूसरे के पास थीं। बातचीत के दौरान अली बाबा के बेटे ने उसे अपने घर भोजन पर आने का निमंत्रण दे दिया। डाकुओं का सरदार निमंत्रण स्वीकार करके अली बाबा के घर पहुँचा।

अली बाबा को अब याद नहीं था कि डाकुओं का सरदार कैसा दिखता है। लेकिन जैसे ही मोरजियाना ने उसे देखा, उसके मन में शक पैदा हो गया। उसने सोचा, "यह आदमी पहले भी यहाँ आ चुका है। इसका इरादा कुछ बुरा करने का है। मुझे इसे रोकना होगा।"

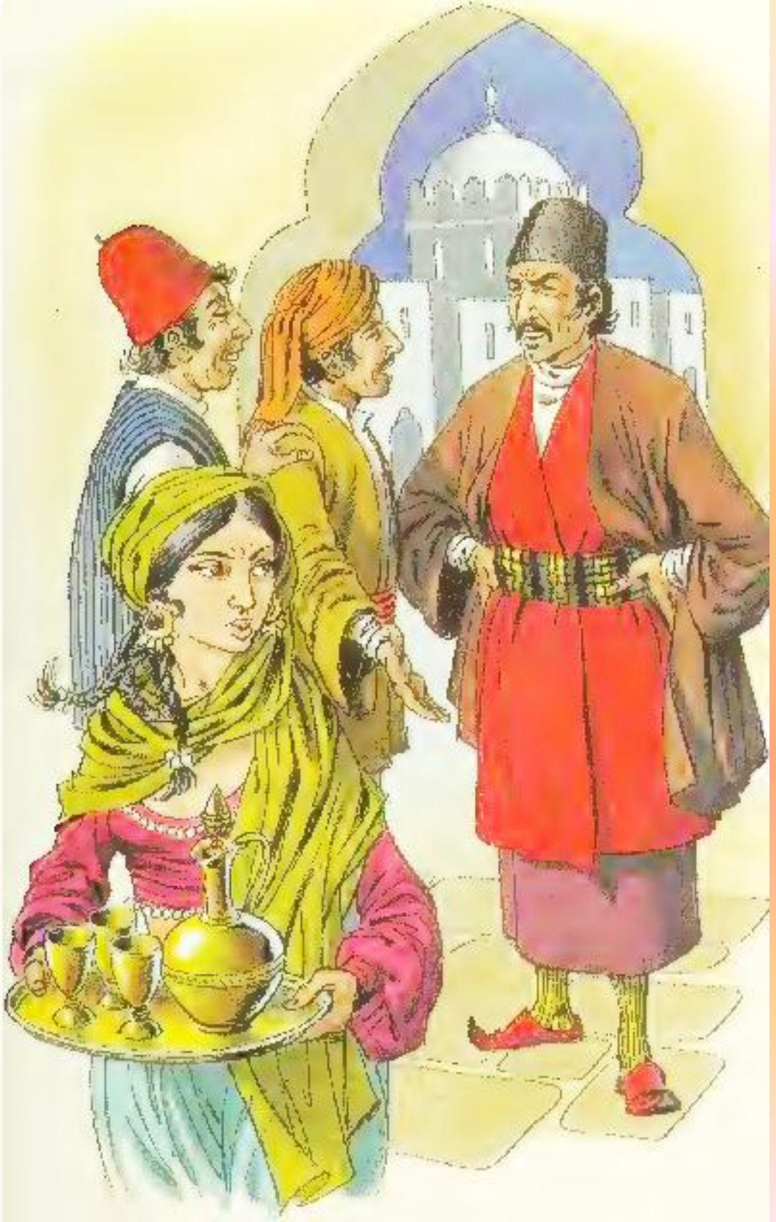
तब उसने अली बाबा से कहा, "जब भोजन समाप्त हो जाए, तो क्या मैं आकर आप लोगों के लिए नृत्य करूँ?"

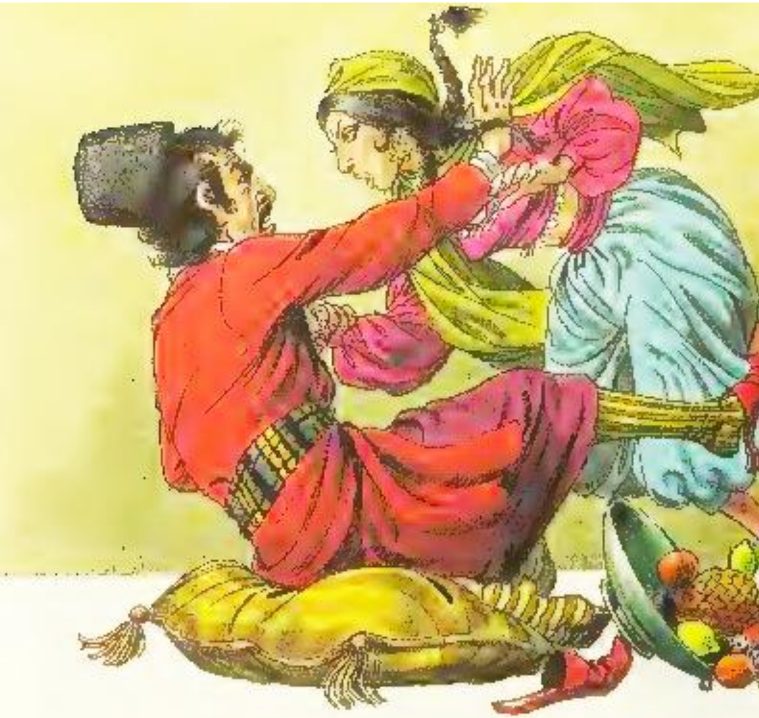
अली बाबा ने अनुमति दे दी। भोजन समाप्त होने के बाद मोरजियाना कमरे में आई और नृत्य करने लगी।

जब उसका नृत्य समाप्त हुआ, तो वह एक प्याला लेकर कमरे में घूमने लगी ताकि लोग उसमें इनाम के रूप में कुछ पैसे डाल सकें। अली बाबा ने उसे कुछ पैसे दिए। उसके बेटे ने भी उसे इनाम दिया। फिर वह डाकुओं के सरदार के पास पहुँची। जब वह अपने प्याले में पैसे डाल रहा था, तभी मोरजियाना की नज़र उसके कपड़ों पर पड़ी। उसने देखा कि उसके वस्त्रों में एक छुरा छिपा हुआ था। अब उसे पूरा विश्वास हो गया कि यह आदमी अली बाबा को नुकसान पहुँचाने आया है।

डाकुओं का सरदार कुछ कर पाता, उससे पहले ही मोरजियाना ने फुर्ती से उसका छुरा छीन लिया और उसी छुरे से उसे मार गिराया।

यह देखकर अली बाबा घबराकर खड़ा हो गया और चिल्लाया, "तुमने यह क्या कर दिया?"





मोरजियाना ने शांत स्वर में उत्तर दिया, "अगर मैं ऐसा न करती, तो यह तुम्हें मार डालता। यही वह डाकुओं का सरदार है जो तेल के मटकों के साथ यहाँ आया था।"

अली बाबा ने ध्यान से उस आदमी को देखा। अब उसे समझ आ गया कि मोरजियाना सच कह रही थी।
उसने महसूस किया कि एक बार फिर मोरजियाना ने अपनी समझदारी और साहस से उसकी जान बचाई है।

डाकुओं का सरदार मर चुका था। अब चालीस डाकुओं का खतरा हमेशा के लिए समाप्त हो गया था।
अली बाबा ने मोरजियाना से कहा, "तुम बहुत अच्छी लड़की हो। मैं तुमसे इतना प्रसन्न हूँ कि यदि तुम मेरे बेटे से विवाह कर लो, तो मुझे बहुत खुशी होगी।"



मोरजियाना ने यह प्रस्ताव स्वीकार कर लिया। कुछ समय बाद मोरजियाना और अली बाबा के बेटे का विवाह हो गया।

जब भी उन्हें धन की आवश्यकता होती, वे गुफा में जाकर डाकुओं के ख़ज़ाने में से थोड़ा-बहुत धन ले आते।

लेकिन उन्होंने यह ध्यान रखा कि उस ख़ज़ाने का अधिकांश भाग गरीब और ज़रूरतमंद लोगों की सहायता में खर्च किया जाए।

इस प्रकार सबका जीवन सुखपूर्वक बीतने लगा। अली बाबा, उसका परिवार और मोरजियाना सभी खुश थे।

और इस तरह कहानी का अंत सभी के लिए अच्छा हुआ—सिवाय उन डाकुओं के, जिन्होंने लालच और बुराई का रास्ता चुना था।

